डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

बी० ए० सेमेस्टर – II
विषय – संस्कृत

महाकवि भारवि का सामान्य परिचय

अर्घदीक्षित सेविता सन्नीरजसुहासिनी।
अन्नोलूक निरानन्दा भा रवेस्ति भारवेः॥

महाकवि भारवि वास्तव में भा रवि (सूर्य के प्रकाश) हैं। इनका संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित स्थान रहा है। इनका प्रामाणिक जीवन वृत्त सर्वथा अप्राप्त है फिर भी जनश्रुतियों के आधार पर कहा जाता है कि भारवि धारानगरी के निवासी थे, इनकी माता का नाम सुशीला और पिता का नाम श्रीधर था। इनकी पत्नी रसिकवती या रसिका थी 'अवन्तिसुन्दरी कथा' के अनुसार इनके पिता का नाम नारायण स्वामी तथा इनका वास्तविक नाम दामोदर था। भारवि इनकी उपाधि थी। भारवि के काव्य में कालिदास की रचनाओं का बहुत कुछ अनुकरण था। ऐहोल के 634 ई० के शिलालेख में चालुक्यवंशी राजा पुलकेशी द्वितीय की प्रशस्ति है, जिसमें भारवि का स्पष्ट उल्लेख है –

येनायोजि नवेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित कालिदास भारविकीर्तिः॥

भारवि के जन्म स्थान, माता-पिता के नाम आदि के विषय में भी विभिन्न किंवदन्तियाँ हैं। इन्हीं को धारानगरी का निवासी माना जाता है। अवन्ति-सुन्दरी कथा के आधार पर भारवि का जन्म कौशिक गोत्र में हुआ था। चालुक्य वंश के राजा विष्णुवर्धन से उनकी मित्रता हो गई थी और ये उन्हीं के सभा पण्डित थे। इससे स्पष्ट है कि भारवि एक विद्वान् थे, उनका प्रारम्भिक जीवन निर्धनता के कारण कष्टमय

बीता था। भारवि की कीर्ति उनके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 18 सर्गों वाले किरातार्जुनीयम् पर आधारित है। इसमें कौरवों पर विजय प्राप्ति हेतु अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने, किरातवेषधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है। महाकवि भारवि साहित्य के देदीप्यमान रत्नों में से एक हैं। उनका महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। इनके काव्य में शब्द-संचय भावानुकूल है, पद-पद पर अर्थ-गौरव उनके वैदुष्य और गम्भीर चिन्तन का परिचायक है। शृंगार और वीर रस मुख्य रस हैं। समस्त संस्कृत साहित्य में 'किरातार्जुनीयम्' जैसा दूसरा ओज-पूर्ण तथा उच्च काव्य नहीं मिलता। इसमें 18 सर्गों में अन्त तक उत्सुकता बनी रहती है। मध्य में महाकाव्यत्व के लक्षणों के आधार पर ऋतु, पर्वत, सूर्यास्त, जल-क्रीड़ा उषादि का भी वर्णन है। किरात का आरम्भ 'श्री' शब्द से तथा अन्त 'लक्ष्मी' शब्द से होता है जो मंगलाचरण का भी प्रतीक है।